शोध पत्र का उद्देश्य
मध्यप्रदेश के दत्तिया जिले के विशेष संदर्भ में 'जवाहर रोजगार योजना' (शासकीय योजनाओं) को प्रभावित करने वाले कारकों को जान करना तथा विकास के लिए उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध क्षेत्र
दत्तिया जिले के दो विकास खंड दत्तिया एवं सेवदार का चयन किया गया। इन दोनों में 10-10 गाँव अध्ययन के लिये चुने गये जो निम्न प्रकार से हैं -

1. सहेरा 2. नीमडांडा, 3. जरा 4. मगरोल, 5. भगरोल 6. हुका 7. संजयपुरा 8. खमरोला, 9. मदनपुरा 10. चिताई 11. नन्दपुर 12. महला गाँवों का चयन उद्देश्यपूर्ण निर्देशन विधि द्वारा किया गया।

अध्ययन की इकाई
अध्ययन हेतु दोनों विकासखंड के लाभांकित परिवारों को चुना गया। जिसमें दत्तिया विकासखंड के 10 गाँवों के कुल 181 परिवार और सेवदार विकासखंड के कुल 182 निर्धार परिवार चुने गये। इस प्रकार से कुल 363 निर्धार परिवार अध्ययन हेतु चुने गये परिवारों का चयन दत्तिया जिले की जनगणना सूची में सूचीबद्ध निर्धार परिवारों में से किया गया।

शोध विधि
शोध हेतु निम्न शोध विधियाँ अपनाई गईं -
1. सन्यात्य पद्धति
2. संरचना अनुसूची
3. द्वितीयक समक संकलन हेतु विविध पुस्तकालयों में अध्ययन किया
4. सांख्यिकीय निदर्शन

योजना की सीमित सफलता का मूल्यांकन अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि योजना एक सीमा तक अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। इसका विवरण निम्न प्रकार से है -

1 व्यावसायिक ढांचे पर प्रभाव

योजना के लिए रोजगार योजना में वृद्ध हुई तथा उनकी आय में वृद्ध हुई जिससे उन्होंने छोटे-छोटे व्यवसाय आरंभ किए और उन्हें दैनिक लक्ष आय प्राप्त होती है। यह आय दौरान बढ़ी है, किंतु उनकी सीमित आवश्यकताओं में यह महत्वपूर्ण योगदान करती है। लेकिन यदि लाभ स्थाई नहीं था। कुछ दिनों बाद वे अपनी स्थिति को बनाये नहीं रख पाए।

2 पलायन पर प्रभाव

लाभार्थी परिवार गर्मी के मौसम में पारस्परिक रूप से लिखे जाने वाले पलायन से सुरक्षित रहे क्योंकि उन्हें योजना के तहत रोजगार प्राप्त हो गया था।

3 निर्धारण पर प्रभाव

योजना के मौसम में अध्ययित परिवारों में गर्मी के स्तर में तुलनात्मक रूप से घिरावट दर्ज की गई। अर्थात् उनकी आयकर स्थिति कुछ उन्नत हुई लेकिन यह बहुत थोड़ी थी क्योंकि वह दिनों की संख्या कम थी तथा पूरी मजदूरी का भुगतान नहीं किया गया।

4 आवाज पर प्रभाव

इसकी सहायक योजना 'इंदिरा आवाज योजना' के अंतर्गत उन लिखित परिवारों को मकान बनाने के लिये धन राशि उपलब्ध कराई गई, जिनके पास अपनी स्वयं की भूमि थी। किंतु अनेक लाभार्थियों ने अत्यधिक भागदीढ़ की शिकायत की।

5 कृषि उत्पादन पर प्रभाव

इस योजना में 10 लाख कुंप लचू एवं सीमांत कृषकों हेतु निर्मित कराने के लिये सहायता राशि उपलब्ध कराई गई, जिससे सिंचाई के कारण उनके कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई किंतु यह वृद्धि सीमित है, क्योंकि कृषकों के पास कृषि भू क्षेत्र का आकार बहुत छोटा है।

6 रोजगार पर प्रभाव

यह बंपरोजगारी उन्मूलन की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसमें पंचायत स्तर पर परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है, जिससे लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इससे लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ किंतु अंशित नहीं होने के कारण लोगों को पूरी मजदूरी का भुगतान नहीं किया गया। अतः वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुये। योजना की सफलता में बाधाएं एवं वृद्धि उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है, कि 'जवाहर रोजगार योजना' की सफलता निर्धारित है। इसकी पूर्ण सफलता में निम्नलिखित मुख्य बाधाएं हैं -

1 योजना निर्धारणों में जागरूकता के अभाव से वे अपना पूरा लाभ नहीं ले पाते।
2 योजना का क्षेत्रीय परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार न होना।
3 योजना के अंतिम प्रचार-प्रसार का अभाव रहा है। अतः लोग लाभ नहीं ले पाये हैं।
4 बहनदीवार एवं लालफाता के कारण पंचायत स्तर पर अपूर्वी योजनाओं को पूर्ण दिखाकर धनराशि हड़प ली गई तथा अनेक बार योजना...
लालफाॅता का कारण असाइंट धीमी गति से चली।
5 पंचायत स्तर पर व्याप्त 'भाई-भतीजावाद' एवं 'जातिवाद' के कारण अनेक अपराध हितग्राह्यों का 
चयन हुआ एवं पात्र हितग्राहियों लाभ से विचित रहे।
6 अनेक बार धनराशि का निरीक्षित कार्य के 
लिये उपयोग न करके शादी-व्याध जैसे कार्यों के 
लिये किया गया।
योजना की व्यटियां
योजना में अनेक व्यटियों विद्यमान पाई गई 
जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं -
1 ग्राम पंचायतों द्वारा क्रियान्वयन योजना की 
व्यट है, क्योंकि अधिकांश सरपंच अशिक्षित व 
कम योग्य थे तथा निजी सम्बंधों को भी महत्व 
प्रदान किया गया।
2 पंचायत सचिवों ने सक्रिय भूमिका नहीं 
निभाई, अनेक पंचायत सचिव, पंचायत कमी के 
रूप में संविधा पर नियुक्त पाये गये। इसकी 
निर्देशक में सरपंच की उच्च निर्भरता होती है।
अतः वे उनके प्रभाव में वित्तीय अनिवार्यताओं 
की अनदेखी करते रहे।
3 योजना के निरीक्षण के लिये विशेष व्यवस्था 
का अभाव रहा तथा प्रशासनिक अधिकृतों के 
पास कम समय रहा।
4 योजना के क्रियान्वयन में जनबाहीदारी का 
अभाव रहा।
5 अनेक महिला संगठनों के स्थान पर उनके पति 
दावतित निभाते हुये पाये गये। जिन्होंने आयक 
लाभ के लिये अनिवार्यताओं की।
6 योजना में श्रम दिवस बहुत कम रखे गये 
जबकि लोगों को अधिक कार्य दिवस हेतु रोजगर 
की आवश्यकता रहती है। अतः लोगों ने कम 
रूप दर्शित की।
7. योजना में लोगों को कोई प्रशिक्षण प्रदान नहीं 
किया गया, इसलिये वे स्वरोजगर स्थापित करने 
में असफल रहे।
शासकीय योजनाओं की सफलता हेतु मुख्य 
यदि जवाहर रोजगर योजना को एक निर्देश 
(संपन) मानकर विचार करें, तो निम्नलिखित 
सुझाव दवारा शासकीय योजनाओं की सीमित 
सफलता को दूर करके उन्हें पूर्ण सफल बनाया 
जा सकता है। इसकी सफलता हेतु मुख्य दुःख 
निम्नलिखित हैं -
1. योजना के लागू होने के पूर्व से ही उसकी 
जाकारी आमजन तक पढ़ाने हेतु पर्याप्त 
प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।
2. जनबाहीदारी की प्राप्ति हेतु यामों में शिक्षा 
एवं जागरूकता का स्तर उन्नत किया जाना 
चाहिए।
3. योजनाओं का स्वरूप स्थानीय परिस्थितियों 
के अनुसार होना चाहिए।
4. ग्राम पंचायतों के निरीक्षित प्रतिनिधियों को 
तथा आमजन को शासकीय कार्य पद्धतियों का 
उपयोग प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
5. भाई-भतीजावाद एवं 'जातिवाद' जैसे तत्वों पर 
कठोरता से नियंत्रण स्थापित किया जाना चाहिए।
6. शिक्षा योजना के क्रियान्वयन में शिक्षा 
पृष्ठभूमि के कमिका को महत्व प्रदान किया 
जाना चाहिए।
7. भुगतान चैक से या सीधे खाते में किया जाना 
चाहिए।
8. स्वीच्छ संगठनों का सहयोग जनबाहीदारी 
एवं जागरूकता उत्पन्न करने हेतु किया जाना 
चाहिए।
9. योजनाओं के निरीक्षण हेतु विशेष दलों का 
गठन किया जाना चाहिए।
10. योजनाओं की सफलता हेतु महिलाओं की जनभागीदारी पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए।

11. योजनाओं के उचित क्रियान्वयन पर पंचायतों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जबकि असफल क्रियान्वयन पर पंचायतों को दण्डित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार से स्पष्ट है कि ज्वाहार रोजगार योजना शामिल और संबंधित योजनाओं के सम्बन्ध में कार्य करने वाले व्यक्तियों की समस्याओं का उल्लेख किया गया है। मैं अनेकों विषयों के लिए इस प्रकार की समस्याओं का उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, दूसरे व्यक्तियों और टीमों के लिए यह स्पष्ट है कि यह समस्याओं का प्रभाव है। यह समस्याओं के लिए कार्य करने वाले व्यक्तियों की समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अवधारणा, ए.एस. (1998), भारतीय अर्थव्यवस्था: विकास एवं आयोजन, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. भारत की जनगणना (1981), भारत विभाग, सार्वजनिक संपादन, भोपाल।
3. दत्त, र. व. एवं संदर्भ आ.पी. (1998), भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. एच. एन. एन. सोसाइटी लिट. नई दिल्ली।
4. मुख्यत्व, मनीषा (2004), दत्तिया जिला में जवाहर जवाहर रोजगार योजना का विलिन्यागत अर्थव्यवस्था 1991-97, अन्तराष्ट्रीय शोध संस्थान, विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
5. जिला सांख्यिकी दस्तावेज़ (1997), जिला दत्तिया।
6. मध्यप्रदेश सांख्यिकी संस्थान, 1994, भोपाल।
7. योजना, दिसंबर (1998), नई दिल्ली।
8. शंभर, समर रत्न (1998), भारतीय अर्थव्यवस्था: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।